2

कर्नाटक संगीत की मुख्य धारणायें

पूर्व पाठ में हमने भारतीय संगीत के उद्‌गम और विकास के साथ- साथ कुछ प्रमुख व्यक्तित्त्व और रचनाओं के विषय में सीखा। इस पाठ में विद्यार्थी कर्नाटक संगीत की मुख्य धारणाओं और मूल सिद्धांतों से परिचित होंगे।

समकालीन संगीत परिवेश के अनुसार भारतीय संगीत सर्वसम्मत विचारधारा और प्रमाणित सूत्रों के आधार पर अग्रिम अध्ययन के लिये स्थापित हो गया। इस विकास के साथ कई संगीत शास्त्रज्ञों (म्यूजिकोलोजिस्ट) ने कर्नाटक संगीत के विषय में अपनी परिकल्पना और विचारों का उल्लेख किया। भारतीय संगीत के उन विद्यार्थियों को जो कर्नाटक संगीत को व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर सीख रहे हैं, इन सिद्धांतों और कुछ मूल परिभाषायें सीखनी पड़ती हैं।

इस संदर्भ में नाम प्रणाली तथा मूल धारणायों का ज्ञान अति आवश्यक है।

कर्नाटक संगीत कई आयामों में भिन्न है, जैसे इसका मधुर स्वरूप, गमक का महत्त्व और इसकी तत्काल रचना की क्षमता इत्यादि और सबसे अधिक इसका निर्मल स्वरूप। भारतीय संगीत की रागों ने गूढ़ तथा अति प्रभावशाली ताल पद्धति की भांति अपनी असीमित सृजनशीलता से पश्चिम को सदैव मुग्ध किया है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी:

- कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की मूल शब्दावली का वर्णन कर पायेगा;
- श्रुति और स्वर के अंतर का वर्णन कर पायेगा;
- विभिन्न प्रकार की हार्मनी में अंतर कर पायेगा;
- भिन्न तालों और लयों की पहचान कर पायेगा।

2.1 नाद

नाद सांगीतिक ध्वनि है। यह वह ध्वनि है जो पर्याप्त समय के लिये एक विशेष आंदोलन संख्या सहित स्थिर रहती है। भारतीय संगीत की इस विशेष धारणा की उत्पत्ति नादब्रह्म से इसके आध्यात्मिक स्वरूप के कारण हुई। 'नाद' शब्द 'नद्यते' से उत्पन्न हुआ है। नाद आहत और अनाहत दो प्रकार का है। अनाहत एक असाधारण मानव ध्वनि की भांति वर्णित है जो एक साधारण मनुष्य को सुनाई नहीं देती। आहत मानव को सुनाई देती है। उसके उद्‌गम स्रोत के अनुसार आहत नाद का वर्गीकरण शरीरज, चर्मज, लोहज, वायुज आदि में किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. नाद क्या है?
2. नाद कितने प्रकार के हैं?
3. नाद शब्द की उत्पत्ति कहां से हुई?
4. उस नाद का नाम बताइये जो साधारण मानव को नहीं सुनाई देता।
5. आहत नाद का वर्गीकरण किस आधार पर किया गया है?

2.2 स्वर

स्वर सांगीतिक नोट है। तकनीकी तौर पर भारतीय संगीत की रागें अथवा मेलडी इन सूक्ष्म तत्त्वों से निर्मित हैं। विद्‌वानों द्वारा स्वर शब्द इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

स्वतो रंजयति श्रोतृचित्तानां स स्वर उच्यते

अर्थात, स्वर वह है जो श्रोताओं के ह्रदय का मनोरंजन करने में सक्षम है। स्वर संख्या में सात हैं जो सामुहिक रूप से सप्त स्वर जाने जाते हैं। वे इस प्रकार हैं:

क्रम सं	स्वर	संक्षिप्त रूप
1	षड्षं	स
2	ऋषभं	रि
3	गंधारं	ग
4	मध्यमं	म
5	पंचमं	प
6	धैवतं	ध
7	निषादं	नि

टिप्पणी

इनमें से प्रत्येक स्वर भिन्न आंदोलन संख्याओं के बढ़ते क्रम में गाया जाता है। ये आंदोलन संख्यायें अथवा स्थान जिस पर ये गाये जाते हैं उन्हें स्वरस्थान कहते हैं। यद्यपि कुल मिलाकर सात स्वर हैं, षड्ज और पंचम को छोड़कर संपूर्ण पांच स्वरों की एक और आंदोलन संख्या अथवा स्वरस्थान की अवस्था है जिससे कुल मिलाकर बारह स्वरस्थान बनते हैं। ये सामुहिक रूप से द्वादश स्वर स्थान के नाम से जाने जाते हैं। ये हैं:-

1.	षड्जं	स
2.	शुद्ध ऋषभं	रि1
3.	चतुश्रुति ऋषभं	रि2
4.	साधारण गंधारं	ग1
5.	अंतर गंधारं	ग2
6.	शुद्ध मध्यमं	म1
7.	प्रति मध्यमं	म2
8.	पंचमं	प
9.	शुद्ध धैवतं	ध1
10.	चतुश्रुति धैवतं	ध2
11.	कैशिकी निषादं	नि1
12.	काकली निषादं	नि2

पाठगत प्रश्न 2.2

1. कुल कितने स्वर हैं?
2. स्वर के आंदोलन संख्या के स्थान का नाम बताइये।
3. कुल कितने स्वरस्थान हैं?
4. द्वादश स्वरस्थान क्या है?
5. स्वर शब्द का विवरण दीजिये।

2.3 श्रुति

श्रुति स्वर मानों का सबसे छोटा अंतराल है (दो आंदोलन संख्याओं के मध्य का अंतर) जो प्रशिक्षित कान द्वारा ही मालूम होता है। यह प्राचीन संगीत विदों द्वारा इस प्रकार परिभाषित है:-

श्रवणेंद्रीय ग्रह्यत्वाद् धवनिरेव श्रुतिर्भवेत्

दूसरे शब्दों में श्रुति और स्वर एक सिक्के के दो पक्ष हैं। प्राचीन समय से विद्वानों के बीच इन दोनों के विषय में विवाद समानांतर रहा है। कई संगीत विदों का मानना है कि आंदोलन संख्या की धवनि **श्रुति** कहलाती है। जब वह संगीत वाद्यों पर बजती है और जब कोई शब्दों के साथ गाता है तो **स्वर** कहलाती है।

आंदोलन संख्याओं के इन अंतरों के आकार के अनुसार श्रुतियों का तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है:-

- सबसे छोटा प्रकार जिसे **न्यून श्रुति** कहते हैं
- मध्य प्रकार जिसे **प्रमाण श्रुति** कहते हैं
- सबसे बड़ा प्रकार जिसे **पूर्ण श्रुति** कहते हैं

यद्यपि सभी म्यूजिकोलोजिस्ट द्वारा श्रुतियों की कुल संख्या 22 मानी गयी है; इस संदर्भ में विचारों में अंतर भी है। **'भरत'** प्रथम म्यूजिकोलोजिस्ट थे जिन्होंने अपने प्रयोग में श्रुतियों की कुल संख्या बता कर उनके भिन्न नामों का उल्लेख किया।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. श्रुति क्या है?
2. कुल कितने प्रकार की श्रुतियां हैं?
3. श्रुतियों की कुल कितनी संख्या है?
4. श्रुतियों पर प्रयोग करने वाला कौन सा प्रथम म्यूजिकोलोजिस्ट है?
5. श्रुति और स्वर के मध्य अंतर बताइये।

2.4 स्थायीध स्थान

भारतीय संगीत में षड्ज और निषाद का अंतराल या विस्तार स्थान (कर्नाटक पद्धति में स्थायी) कहलाता है। इस स्थान में सात स्वर जैसे षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद और स्वरस्थान के अन्य प्रकार सम्मिलित हैं। सप्त स्वरों का यह विस्तार **'मध्य स्थान'** के रूप में जाना जाता है।

सप्त स्वरों का अगला विस्तार जो निषाद के पश्चातषड्ज से आरंभ होता है उसे **तार स्थान** कहते हैं। सप्त स्वरों का अगला विस्तार जो तार स्थान के ऊपर है उसे **अति तार स्थान** कहते हैं।

टिप्पणी

मध्य स्थान के नीचे सप्त स्वरों के विस्तार को **मंद्र स्थान** कहते हैं और इसके नीचे के स्थान को **अनुमंद्र स्थान** कहते हैं।

इस प्रकार कुल पांच स्थान हैं। मानव धवनि के विस्तार के मध्य में केवल तीन स्थान हैं। केवल संगीत वाद्य ही इन पांच स्थानों तक सरलता से पहुंच सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. स्थायी/स्थान शब्द का वर्णन कीजिये।
2. कुल कितने स्थान हैं?
3. मानव ध्वनि कितने स्थानों तक पहुंच सकती है?
4. वादक कितने स्थानों तक पहुंच सकते हैं?

2.5 गमक

स्वरस्य कंपो गमकः श्रोतृचित्त सुखावः

अर्थात स्वर का कंपन श्रोता के मन को आनंद प्रदान करता है। स्वर से जुड़े सूक्ष्म अलंकारों को गमक कहते हैं। ये कंपन या तौर– तरीके जो स्वर समुदायों तथा राग को सौंदर्य प्रदान करते हैं भारतीय संगीत के विशेष गुण हैं। कई संगीत विदों ने विभिन्न प्रकार के गमक बताये हैं तथा उनकी संख्या में भी अंतर होता रहता है।

संगीत रत्नाकर में निम्नलिखित 15 गमक बताये गये हैं:–

1. तिरुपं
2. स्फुरितं
3. कंपितं
4. लीनं
5. आंदोलितं
6. वली
7. त्रिभिन्नं
8. कुरुलं
9. आहतं

10. उल्लासितं

11. प्लवितं

12. हुंफितं

13. मुद्रितं

14. नामितं

15. मिश्रितं

इसके अतिरिक्त कोहल 13 गमक और अहोबल पारिजात में 17 गमक बताते हैं। कर्नाटक संगीत में संगीतज्ञ आजकल दशविध गमक मानते हैं।

पाठगत प्रश्न 2.5

1. गमक से आप क्या समझते हैं?
2. संगीत रत्नाकर के अनुसार कुल कितने गमक हैं?
3. कोहल के अनुसार कुल कितने गमक हैं?
4. संगीत पारिजात के अनुसार कुल कितने गमक हैं?

2.6 मेल

संगीत सप्तक जिनमें नई राग अथवा मेलडी बनाने की क्षमता है उन्हें मेल कहते हैं। 'मेल' शब्द का साहित्यिक अर्थ है स्वर का संयोग। विजयनगर सम्राज्य के आचार्य विद्यारण्य ने कर्नाटक संगीत की मेल पद्धति आरंभ की। उन्होंने प्रसिद्ध और प्रमुख मेलडी जो उस समय प्रचलित थीं उन्हें एकत्र करके मेल नाम दिये। इस क्रम में उनके परवर्ती संगीतज्ञों ने अपने समय की प्रमुख मेलडी को एकत्र करके मेल के नाम दिये और मिलते-जुलते रागों को उनमें लाकर जन्य रागों का नाम दिया।

2.6.1 72 मेल परियोजना

व्यंकटमखी ने कर्नाटक संगीत शब्दावली में विद्यमान स्वरस्थानों में 4 काल्पनिक स्वर जैसे षटश्रुति ऋषभं (साधारण गंधारं), शुद्ध गंधारं, (चतुश्रुति ऋषभं) षटश्रुति धैवतं (कैशिकी निषादं) तथा शुद्ध निषादं (चतुश्रुति धैवतं) को मिलाकर स्वर स्थानों में क्रम परिवर्तन और मिश्रण करके 72 मेल परियोजना का गठन करके प्रमुख परिवर्तन किया।

टिप्पणी

2.6.2 षोडश स्वर स्थान

क्रम सं	नाम
1.	षड्ज
2.	शुद्ध ऋषभ
3.	चतुश्रुति ऋषभ
4.	साधारण गंधार
5.	अंतर गंधार
6.	शुद्ध मध्यम
7.	प्रति मध्यम
8.	पंचम
9.	शुद्ध धैवत
10.	चतुश्रुति धैवत
11.	कैशिकी निषाद
12.	काकली निषाद
13.	शुद्ध गंधार (काल्पनिक स्वर)
14.	षटश्रुति ऋषभ (काल्पनिक स्वर)
15.	शुद्ध निषाद (काल्पनिक स्वर)
16.	षटश्रुति धैवत (काल्पनिक स्वर)

गोविंदाचार्य (1857 ई.) ने व्यंकटमखी द्वारा परिकल्पित पूर्व असंपूर्ण मेल पद्धति की कमियों को दूर करके 72 मेल परियोजना बनाई जो हम आजकल मानते हैं। उन्होंने सप्तकों के मेलों की भांति समझे जाने के लिये कुछ नियम रखे जो इस प्रकार हैं:

- सप्तक में सातों स्वर होने चाहिये।
- यह षड्ज से आरंभ होकर उच्च सप्तक में षड्ज पर समाप्त होना चाहिये, अत: कुल आठ स्वर बनते हैं।
- स्वरों को उचित आरोह और अवरोह क्रम में होना चाहिये।
- स्वरों की समरूप विशेषता मेल में पूर्ण रूप से बनाये रखनी चाहिये।

पाठगत प्रश्न 2.6

1. मेल से आप क्या समझते हैं?
2. कर्नाटक संगीत में मेल का विचार कौन लाया?
3. 72 मेल परियोजना को किसने विचारात्मक बनाया?
4. उस संगीत विद का नाम बताइये जिसने 72 मेल परियोजना को परिवर्तित किया।
5. मेल की विशेषतायें क्या हैं?

2.7 राग

राग भारतीय संगीत की केंद्रीय धारणा है। मतंग ने अपनी उदाहरण सहित ख्रति 'बृहद्देशी' में राग की धारणा का सर्वप्रथम परिचय दिया है। उन्होंने राग को इस प्रकार परिभाषित किया हैरू

स्वर वर्ण विशेषेण धवनि भेदेना वहः पुन
राज्यते येन कथित स राग सम्मतसतम।

कोई भी मधुर संगीत रचना जो स्वर समुदायों अथवा विभिन्न भावनाओं द्वारा श्रोताओं का मनोरंजन करती है उसे राग कहते हैं। राग एक लघु मधुर संगीत रचना है जो मेल या जनक सप्तक अथवा स्वर समष्टि से उत्पन्न हुई है। यह लघु रचना अपनी जनक स्वर समष्टि से भिन्न है तथा जनक सप्तक से स्वरस्थान बदलकर अथवा आरोहन या अवरोहन में कोई स्वर छोड़कर अथवा वक्र रूप से बढ़ने से एक भिन्न अस्तित्त्व रखती है। इस प्रकार जनक स्वर समष्टि से नई रागों की उत्पत्ति की संभावना अनंत है। अपने भिन्न स्वरों में विभिन्न गमकों और अलंकारों को जोड़कर एक प्रकार के स्वरों और स्वर समष्टि के साथ भिन्न प्रकार की रागें हैं ।

2.7.1 राग वर्गीकरण

कर्नाटक संगीत के रागों का वर्गीकरण उनके प्रस्तुत करने के ढंग के अनुसार कई प्रकारों में विभाजित किया है। विभिन्न संगीत विदों ने भिन्न कालों में रागों के भिन्न वर्गीकरण किये हैं। विशेष संगीत रचनाओं को काम में लेने के तरीकों के अनुसार ये वर्गीकरण उन कालों के लिये उपयुक्त थे।

टिप्पणी

वर्तमान कर्नाटक रागों का वर्गीकरण निम्नलिखित है:

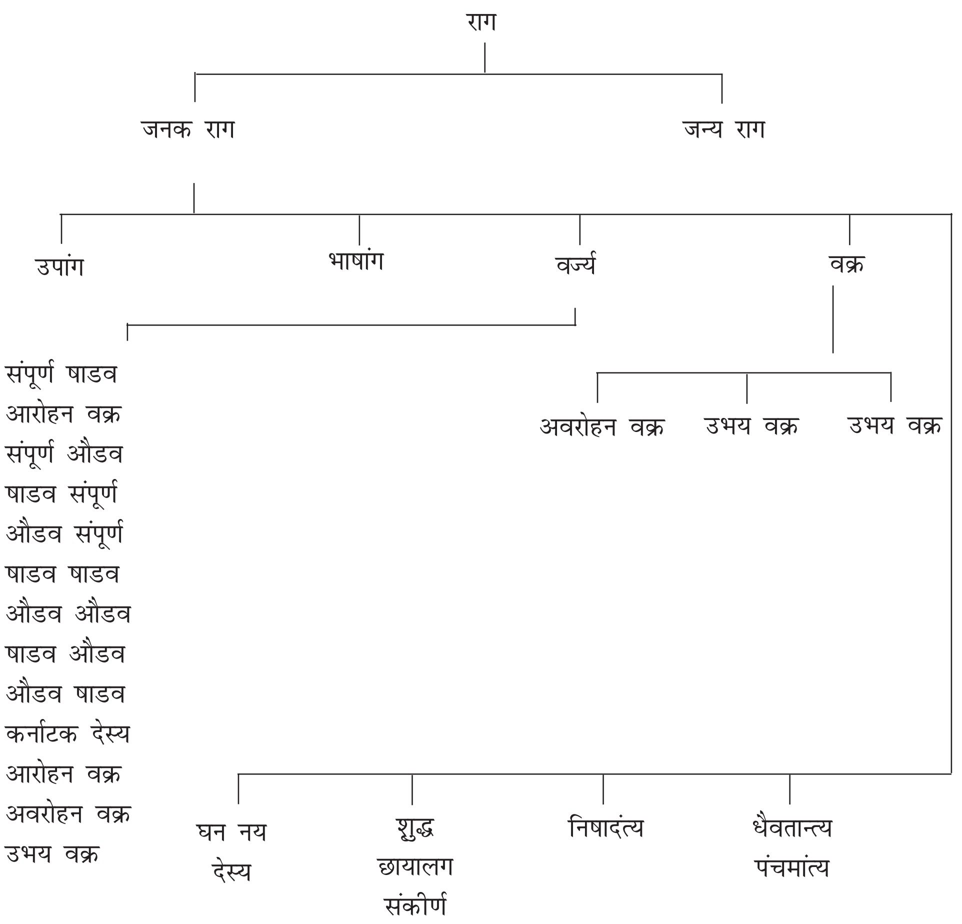

रागों का वर्गीकरण मुख्यतया दो– **जनक राग और जन्य राग** में किया गया है। जनक रागें अपनी पैत्रिक राग का सप्तक अक्षुण रखती हैं परंतु अपने मधुर सौंदर्य के लिये गमक और अन्य प्रकार की गतियां जोड़ देती हैं। जन्य रागों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है, यथारू

2.7.2 उपांग और भाषांग

1. उपांग रागें वे हैं जो केवल अपने पैत्रिक सप्तक अर्थात मेल के स्वरों को सम्मिलित करती हैं।

2. भाषांग रागें वे हैं जो अपने मेल के स्वरों के अतिरिक्त स्वरों को भी सम्मिलित करती हैं।

2.7.3 षाडव, औडव, स्वरांतर, सम्पूर्ण षाडव, षाडव सम्पूर्ण, सम्पूर्ण औडव और औडव संपूर्ण

1. षाडव : जिसके सप्तक में केवल 6 स्वर होते हैं।

2. औडव : जिसके सप्तक में केवल 5 स्वर होते हैं।
3. स्वरांतर : जिसके सप्तक में केवल 4 या 3 स्वर होते हैं।
4. सम्पूर्ण षाडव : जिसके आरोह में सारे और अवरोह में केवल 9 स्वर होते हैं।
5. षाडव सम्पूण : जिसके आरोह में केवल 6 स्वर और अवरोह में सारे स्वर होते हैं।
6. सम्पूर्ण औडव : जिसके आरोह में सारे और अवरोह में केवल 5 स्वर होते हैं।
7. औडव संपूण : जिसके आरोह में केवल क्क स्वर और अवरोह में सारे स्वर होते हैं।

2.7.4 घन, नय, देस्य

1. घन: जो स्वभाव से गौरवपूर्ण, स्पंदनशील तथा तीव्र गति युक्त स्वर समुदायों सहित होते हैं।
2. नय: जो अत्यंत विस्तृत और शास्त्रीयता से भरपूर होते हैं।
3. देस्य: जो अत्यंत आनंददायक, शांत और प्रस्तुत करनेमें सरल होते हैं।

2.7.5 शुद्ध, छायालग, संकीर्ण

1. शुद्ध : जिनकी किसी अन्य मधुर संगीत रचना या मेलडी से समानता नहीं होती है।
2. छायालग : जिनकी प्रगति में किसी अन्य राग के अंश होते हैं।
3. संकीर्ण : जो अत्यधिक गहन होते हैं क्योंकि इनका संबंध कई रागों से होता है।

2.7.6 कर्नाटक और देस्य

1. कर्नाटक: जिनकी उत्पत्ति और विकास देशज होती है।
2. देस्य: जो हिंदुस्तानी पद्धति या किसी अन्य संगीत पद्धति से लिये गये होते हैं।

2.7.7 निषादंत्य, धैवतान्त्य और पंचमांत्य

1. निषादंत्य: इस राग का सप्तक आरोह में मध्य स्थान के निषाद तथा अवरोह में मंद्र स्थान के निषाद पर समाप्त होता है।
2. धैवतान्त्य: इस राग का सप्तक आरोह में मध्य स्थान के धैवत तथा अवरोह में मंद्र स्थान के धैवत पर समाप्त होता है।
3. पंचमांत्य: इस राग का सप्तक आरोह में मध्य स्थान के पंचम तथा अवरोह में मंद्र स्थान के पंचम पर समाप्त होता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.7

1. राग से आप क्या समझते हैं?
2. जन्य राग क्या है?
3. रागों का मुख्य रूप से कितने शीर्षकों में वर्गीकरण है?
4. स्वर संख्या के अनुसार रागों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है?
5. परस्पर मेलडी की समानताओं के अनुसार रागों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है?

2.8 ताल

ताल भी भारतीय संगीत की एक निजी विशेषता है। यह संगीत की गति को नियंत्रित करने की एक विधि है जो चक्रीय प्रक्रिया में हाथों के संकेतों के द्वारा संकलित की जाती है।

कालो लघुनादिमितय क्रियाया
सम्मितो मतिं गीतादेर विदधत्ताल

यद्यपि प्रत्येक देश के संगीत की अंतर्धारा में गति या लय निहित है, भारतीय संगीत भिन्न प्रकार की बाह्य अभिव्यक्ति सहित अद्वितीय है।

2.8.1 ताल दश प्राण

दश प्राण या दस तत्त्वों के अनुसार ताल की सही गणना के लिये दोनों हाथों का मिलाना या अलग करना ताल की परिभाषा है। ये दस तत्त्व काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति और प्रस्तार हैं।

2.8.2 षडंग

ताल के छह मुख्य तत्त्व होते हैं जिन्हें सामुहिक रूप से षडंग कहते हैं। ये अनुद्रुतं, द्रुतं, लघु, गुरु, प्लुतं और काकपदं हैं। ये छह अंग अपने चिह्न और अक्षर काल (समय अवधि) की गणना की विधि सहित निम्नलिखित हैं:

क्रम सं	अंग	चिह्न	अक्षर काल	गणना की विधि
1.	अनुद्रुतं	◡	1	एक ताली
2.	द्रुतं	○	2	एक ताली और एक संकेत
3.	लघु	1	3,4,5,7,9	एक ताली और अंगुलि पर गणना

क्रम सं	अंग	चिह्न	अक्षर काल	गणना की विधि
4.	गुरु	8	8	एक सशब्द लघु और एक निशब्द लघु
5.	प्लुतं	1 8	12	एक ताली, एक कृष्य और एक सर्पिणी
6.	काकपदं	+	16	एक ताली, एक पताका, एक ख्रष्य और एक सर्पिणी

2.8.3 सूलादि सप्त ताल

आरंभ से ही भारतीय संगीत 108 तालों की विधि का अनुसरण कर रहा है, जिसमें प्रथम पांच तालें मार्गी तालें मानी जाती हैं और शेष 103 तालों को देसी ताल कहते हैं। अहोबल द्वारा रचित संगीत ग्रंथ संगीत पारिजात में हम सर्वप्रथम मूल सात ताल अथवा सूलादि सप्त ताल की विचारधारा से अवगत होते हैं। इस प्रकार कर्नाटक संगीत की अलग ताल पद्धति का कर्नाटक संगीत के पितामह संत पुरंदरदास द्वारा महत्त्व दिया गया। उन्होंने इन सात मूल तालों में सरल अलंकारं और अन्य रचनाओं जिन्हें सूलादि कहते हैं का संयोजन किया। ये सात ताल और उनका विवरण निम्न रूप से है:

क्रम सं	ताल	अंग	अक्षर काल	
1.	ध्रुव	लघु- द्रुतं- लघु- लघु	14	$(I_4{}^\circ I_4 I_4)$
2.	मथ्य	लघु- द्रुतं- लघु	10	$(I_4{}^\circ I_4)$
3.	रूपक	द्रुतं- लघु	6	$(0I_4)$
4.	झंपा	लघु-अनुद्रुतं-द्रुतं	10	(I_7UO)
5.	त्रिपुट	लघु- द्रुतं- द्रुतं	7	$(I_3\,00)$
6.	अता	लघु- लघु- द्रुतं- द्रुतं	14	$(I_5 I_5\,00)$
7.	एका	लघु	4	(I_4)

पाठगत प्रश्न 2.8

1. ताल शब्द की परिभाषा दीजिये।
2. आज से पहले की जो ताल पद्धति प्रचलित थी उसका नाम लिखिये।

3. सप्त ताल की विचारधारा कौन लाया?

4. सप्त तालों का प्रयोग किसने आरंभ किया?

5. किसी एक ताल में कितने अंग होते हैं?

आपने क्या सीखा

भारत विविध संस्कृतियों का देश है जो सभी संप्रदायों के संगीत का प्रयोग करता है। इसकी जड़ें वैदिक मंत्रों में हैं जिनका विकास सदियों से होते हुए वर्तमान कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत पद्धतियों के रूप में हुआ। भारतीय संगीत की कई विशेषतायें हैं जैसे श्रुति, गमक, राग, ताल इत्यादि। इसका आरंभ और अंत नाद के ज्ञान से होता है क्योंकि संपूर्ण संगीत नादोपासना है। भारतीय संगीत की एक और विचारधारा नादोपासना के द्वारा ईश्वर की उपासना है, जहां संगीतज्ञ मुक्ति प्राप्त करने के साधन की भांति स्वयं को शुद्ध संगीत के प्रति पूर्णतया समर्पित करता है।

नाद की पूजा या नादोपासना श्रुति और स्वर को आत्मसात करने में सहायक है जो केवल सूक्ष्म अंतर सहित प्राय: समरूप हैं। भारतीय संगीत पद्धति में सात स्वर हैं जो विभिन्न आंदोलन संख्याओं में गाये जाते हैं। इन्हें स्वरस्थान कहते हैं। भारतीय संगीत में हम मेलडी के सिद्धांतों का अनुकरण करते हैं अर्थात धुन बनाने के लिये एक स्वर के पश्चात दूसरे स्वर का क्रमिक प्रयोग होता है। स्वरों के विभिन्न विनिमय और मिश्रण से भिन्न रागें बनती हैं। ये रागें गमक- तौर तरीके और अलंकारों के साथ गाई या बजाई जाती हैं जो भारतीय संगीत को विशेष और ऐश्वर्यपूर्ण बनाती हैं। कर्नाटक संगीत में रचनायें मुख्यतया धार्मिक और कई तालों अर्थात विभिन्न लयों के चक्रीय रूपों में बद्ध होती हैं।

पाठांत अभ्यास

1. कर्नाटक संगीत में नाद की धारणा को संक्षेप में समझाइये।

2. सात स्वरों और उनके प्रकारों की विस्त्रित व्याख्या कीजिये।

3. रागों के वर्गीकरण का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

4. ताल की धारणा तथा उसके प्रकारों के विषय में लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. नाद एक विशेष आंदोलन संख्या सहित सांगीतिक धवनि है जो पर्याप्त समय के लिये स्थिर रहती है।

2. दो
3. नद्यते
4. अनाहत
5. आहत नाद का वर्गीकरण उसके उद्गम स्रोत के अनुसार हुआ है।

2.2

1. सात
2. स्वरस्थान
3. 12
4. स्वरस्थानों की संख्या बारह है इसलिये इन्हें द्वादशस्वरस्थान कहते हैं।
5. यह सांगीतिक नोट है।

2.3

1. श्रुति स्वर आघात का सबसे छोटा अंतराल है या दो आंदोलन संख्याओं के मध्य का अंतर जिसे कान से सुना जा सके।
2. तीन प्रकार
3. 22
4. भरत
5. आंदोलन संख्या की ध्वनि को श्रुति कहते हैं तथा शब्दों के साथ गाने पर स्वर कहते हैं।

2.4

1. भारतीय संगीत में षड्ज और निषाद का अंतराल या विस्तार स्थान कहलाता है।
2. संख्या में पांच
3. 3 स्थान
4. संपूर्ण 5 स्थान

2.5

1. स्वर से जुड़े सूक्ष्म अलंकारों को गमक कहते हैं।

टिप्पणी

2. 15 गमक

3. 13 गमक

4. 17 गमक

5. 10 गमक

2.6

1. संगीत सप्तक जिनमें नई राग अथवा मेलडी बनाने की क्षमता है उन्हें मेल कहते हैं।

2. विद्यारण्य

3. व्यंकटमखी

4. गोविंदाचार्य

5. मेल की मूल विशेषतायें ये हैं कि सप्तक में सातों स्वर षड्ज से आरंभ होकर उच्च सप्तक में षड्ज पर समाप्त होने चाहिये, अत: कुल आठ स्वर बनते हैं। ये आरोह और अवरोह क्रम में होने चाहिये और उनमें स्वरों की समरूप विशेषता होनी चाहिये।

2.7

1. राग एक लघु मधुर संगीत रचना है जो मेल या जनक सप्तक अथवा स्वर समष्टि से उत्पन्न हुई है। यह लघु रचना अपनी जनक स्वर समष्टि से भिन्न है तथा जनक सप्तक से स्वरस्थान बदलकर अथवा आरोहन या अवरोहन में कोई स्वर छोड़कर अथवा वक्र रूप से बढ़ने से एक भिन्न अस्तित्त्व रखती है।

2. जन्य राग एक लघु मधुर संगीत रचना है जो मेल या जनक सप्तक अथवा स्वर समष्टि से उत्पन्न हुई है।

3. दो- जनक और जन्य

4. षाडव, औडव, स्वरांतर और सम्पूर्ण

5. शुद्ध, छायालग और संकीर्ण

2.8

1. ताल संगीत की गति को नियंत्रित करने की एक विधि है जो चक्रीय प्रक्रिया में हाथों के संकेतों के द्वारा संकलित की जाती है।

2. 108 ताल पद्धति

3. अहोबल

4. संत पुरंदरदास

5. 6

निर्देशित कार्य कलाप

1. पैत्रिक सप्तक के साथ आरोहन और अवरोहन सहित विभिन्न प्रकार के रागों को मालूम करने का प्रयत्न कीजिये।

2. प्रत्येक ताल की अवधि और गणना के तरीके को मालूम कीजिये।